अध्याय तृतीय
अध्ययन पद्धति

विकलांग खिलाड़ियों तथा गैर खिलाड़ी विकलांगों की भावनात्मक परिपक्वता एवं आत्म विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु अध्ययनकर्ता ने वैज्ञानिक पद्धतियों का चयन कर कार्य करने की आवश्यकता महसूस की, इस हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा प्रमुखतः निम्नलिखित अध्ययन पद्धति का चयन किया गया।

3.1 न्यादर्श :

अध्ययन हेतु विकलांगों हेतु आयोजित राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले 100 पुरुष खिलाड़ियों (औसत आयु 22.99 वर्ष) तथा 100 महिला खिलाड़ियों (औसत आयु 23.50 वर्ष) का चयन किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु खेलों में सहभागिता न रखने वाले शारीरिक रूप से विकलांग 100 पुरूष (औसत आयु 22.11 वर्ष) एवं 100 महिला (औसत आयु 22.24 वर्ष) आयु का चयन किया गया। न्यादर्श चयन की संपूर्ण प्रक्रिया यादृच्छिक चयन पर आधारित थी। चयनित न्यादर्श की आयु सीमा 18-30 वर्ष के मध्य थी।

3.2 परीक्षण विधि :

अध्ययन में प्रयुक्त चरों यथा आत्म विश्वास एवं भावनात्मक परिपक्वता की जाँच हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया।

(अ) भावनात्मक परिपक्वता प्रश्नावली :

न्यादर्श की भावनात्मक परिपक्वता की जांच सिंग तथा भार्गव (1990) द्वारा निर्मित पांच आयामों यथा भावनात्मकअस्थिरता, भावनात्मक दमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा नेतृत्वहीनता, की संवेगात्मक परिपक्वता प्रश्नावली द्वारा की गयी। इस प्रश्नावली में कुल 48 प्रश्न है तथा सभी प्रश्नों के कुल 5 उत्तर अत्यधिक, बहुधा, अनिश्चित, प्रायः एवं कभी नहीं है। इस परीक्षण की वैधता 0.64 एवं विश्वसनीयता 0.75 है।

(ब) आत्मविश्वास परीक्षण प्रश्नावली :-

चयनित न्यादर्श के आत्मविश्वास का मूल्यांकन पाण्डेय (1983) द्वारा निर्मित आत्म विश्वास परीक्षण प्रश्नावली (Pandey Self Confidence Inventory- PSCI) द्वारा किया गया। हिन्दी में निर्मित इस प्रश्नावली में कुल 60 प्रश्न हैं जिसमें 18 प्रश्नों की प्रकृति धनात्मक एवं 42 प्रश्नों की प्रकृति ऋणात्मक है। यह प्रश्नावली सांख्यिकीय रूप से वैध एवं विश्वसनीय पायी गयी है।

3.3 प्रक्रिया :-

चयनित विकलांग खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों पर मनोवैज्ञानिक चरों यथा आत्म विश्वास एवं भावनात्मक परिपक्वता से संबंधित आंकड़ों के संकलन के लिए अध्ययनकर्ता द्वारा निम्नलिखित प्रक्रिया द्वारा आंकड़ों का संकलन किया।

- अध्ययनकर्ता द्वारा चयनित न्यादर्श को यह विश्वास दिलाया गया कि उनके द्वारा दी जा रही जानकारी केवल शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उपयोग की जावेगी तथा इसे गोपनीय रखा जायेगा।
- सभी प्रश्नावलियों का परीक्षण-प्रशासन प्रयोगशाला सदृश परिस्थितियों में किया गया।
- चयनित विकलांग खिलाड़ियों को 5-10 के समूह में लेकर सर्वप्रथम पाण्डेय (1983) द्वारा निर्मित आत्म विश्वास परीक्षण प्रश्नावली (Pandey Self Confidence Inventory- PSCI) द्वारा का प्रशासन किया गया।
- 05-10 मिनट विश्राम के पश्चात् चयनित न्यादर्श पर सिंग तथा भार्गव (1990) द्वारा निर्मित भावनात्मक परिपक्वता प्रश्नावली का प्रशासन किया गया।
- चयनित गैर खिलाड़ी विकलांगों पर उपरोक्त मनोवैज्ञानिक प्रश्नावलियों का प्रशासन उनकी उपलब्धता के अनुसार किया गया।

अध्ययन हेतु चयन किये गये विकलांग खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों द्वारा भावनात्मक परिपक्वता एवं आत्म विश्वास प्रश्नावलियों पर दी गयी प्रतिक्रियाओं को प्रश्नावली निर्माताओं द्वारा सुझायी गयी विधि द्वारा संख्यात्मक रूप से अंकित किया गया। अंत में प्राप्त आंकड़ों को अध्ययन

हेतु निर्धारित समूहों में सारणीकृत कर अध्याय एक में निर्मित परिकल्पनाओं की जाँच उपर्युक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा की गयी ।

3.4 चरों की प्रकृति :

(अ) आत्म विश्वास :

Agnihotri(1987) के अनुसार आत्म विश्वास से तात्पर्य व्यक्ति के स्वयं के संबंध में विचार, उसकी कल्पनाएँ तथा भविष्य के प्रति उसकी उच्च आकांक्षाओं से है ।

Bandura (1986) ने आत्म विश्वास को एक अभिप्रेरक माना है जो कि व्यक्ति के दैनिक जीवन के व्यवहार को नियंत्रित करता है । बंडूरा के अनुसार स्वयं की आत्म धारणा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण ही आत्म विश्वास है ।

प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है, अतः तुलनात्मक परिकल्पनाओं की जाँच के दौरान आत्म विश्वास को आश्रित चर के रूप में प्रयुक्त किया गया है जबकि पारस्परिक परिकल्पनाओं की जाँच करते समय इसे अनाश्रित चर के रूप में प्रयुक्त किया गया है ।

(ब) भावनात्मक परिपक्वता :

प्रस्तुत अध्ययन में भावनात्मक परिपक्वता को अनुसंधान अभिकल्प के अनुरूप आश्रित एवं अनाश्रित दोनों ही रूप में प्रयुक्त किया गया है क्योंकि पूर्व में किये गये कार्यों से यह तथ्य स्थापित हुआ है कि आत्म विश्वास एवं भावनात्मक परिपक्वता एक दूसरे से सहसंबंधित हैं ।

(स) विकलांगता :

विश्व स्वास्थ्य संगठन (1980) के अनुसार अक्षमता से तात्पर्य किसी कार्य को करने में होने वाली शारीरिक असुविधा या क्षमता से जिसे सामान्य व्यक्ति आसानी से कर सकता है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शारीरिक विकलांग में वह शामिल होते है जिनमें किसी सामान्य कार्य को करने में संवेदी एवं शारीरिक परेशानी होती है तथा उन्हें कार्य संपन्न करने के लिये बाहरी सहयोग की आवश्यकता होती है । संवेदी एवं शारीरिक अक्षमताओं से पीड़ित व्यक्ति को शारीरिक रूप से विकलांग

कहा जाता है। शारीरिक रूप से विकलांगों की श्रेणी में मुख्यतः अस्थि विकार से पीड़ित व्यक्ति, अंग-भंग, आग से जले हुए अंग आदि को शामिल किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में चयनित न्यादर्श शारीरिक रूप से विकलांगों की श्रेणी के हैं।

(द) खेलों में सहभागिता

प्रस्तुत अध्ययन में खेलों में सहभागिता से तात्पर्य प्रतिस्पर्धात्मक खेलों में भागीदारी है। अतः अध्ययन हेतु विकलांगों हेतु आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धात्मक खेलों में भाग लेने वाले विकलांग ही खिलाड़ी की श्रेणी में माने गये हैं।

3.5 अनुसंधान अभिकल्प

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुसार अनुसंधानकर्ता ने तुलनात्मक एवं पारस्परिक परिकल्पनाएँ स्थापित की हैं जिनकी पुष्टि के लिये मिश्रित अभिकल्प का प्रयोग आवश्यक है। अतः अध्ययन की प्रकृति के दृष्टिगत अध्ययनकर्ता ने तुलनात्मक प्रारुप एवं कारक अभिकल्प इन दो शोध पद्धतियों पर आधारित अनुसंधान अभिकल्प का चुनाव किया। प्रस्तुत अध्ययन में दो समूहों के मध्य आश्रित चरों की तुलना की गयी है, अतः इस अध्ययन हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया।

कारक अभिकल्प (Factorial Design) सरल से जटिल तक अनेक प्रकार के हैं, इसमें दो या दो से अधिक चरों तथा प्रत्येक चर का दो या से अधिक स्तरों पर एक साथ अध्ययन किया जा सकता है। अतः अनुसंधानकर्ता ने पारस्परिक परिकल्पनाओं की जांच हेतु कारक अभिकल्प को अध्ययन का आधार बनाया।

सहसंबंधात्मक परिकल्पनाओं की जाँच Pearson correlation 'r' द्वारा की गयी है। तुलनात्मक परिकल्पनाओं की जाँच हेतु Independent Sample 't' test and One-way ANOVA का प्रयोग किया गया है। पारस्परिक परिकल्पनाओं की जाँच 2x2 एनोवा पद्धति से की गयी है।